प्रातः क्लास 15-6-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह है याद की यात्रा। यात्रा में तो बहुत होते हैं। सिर्फ तुम नहीं हो। तुम नज़दीक में हो। जो जो जहां-जहां भी हैं बाप को याद करते हैं तो वह आटोमेटिकली नज़दीक आ जाते हैं। जैसे चन्द्रमा के आगे कोई सितारे बहुत ~~नजदीक~~ नजदीक होते हैं। कोई बहुत चमकते हैं। कोई नजदीक कोई दूर भी होते हैं। देखने में आता है यह स्टार तो बहुत चमकता है। यह बहत नजदीक है। यह तो चमकता ही नहीं है। तुम्हारा भी गायन है। तुम हो ज्ञान और योग के सितारे। ज्ञान सूर्य मिला है बच्चों को। बाप बच्चों को ही याद करते हैं। जो सर्विस एबुल बच्चे हैं तो ज्ञान सूर्य बाप भी उन्हों को ही याद करते हैं। बच्चे भी याद करते हैं। जो बच्चे बाप को याद नहीं करते हैं उनको बाप की याद भी नहीं पहुंचती है। याद से याद मिलती जरूर है। बच्चों को भी याद करना है। बच्चे कहते हैं बाबा आप हमको याद करते हैं। बाप कहते हैं क्यों नहीं। इस रीति बाप को याद क्यों नहीं करते हैं। जो जास्ती पवित्र हैं और बाप से बहुत प्यार है तो कशिश भी ऐसी करते हैं। हरेक अपने से पूछे हम कहां तक बाबा को याद करते हैं। एक की याद में रहने से फिर भी पूरानी दुनिया जैसे कि भूल जाती है। बाप को ही याद करते2 जाकर मिलते हैं। अभी मिलने का समय आया हुआ है। ड्रामा का राज़ भी बाप ने समझाया है। बाप आते हैं आकर के अपना रूहानी बच्चा बनाते हैं। पतित से पावन कैसे बनो सो सिखलाते हैं। बाप तो एक ही है। उनको ही सभी याद करते हैं। परन्तु याद सभी को नम्बरवार अपने2 पुरुषार्थ अनुसार मिलते हैं। जितना बहुत याद करेंगे वह जैसे कि सामने खड़े हैं। कर्मातीत अवस्था भी ऐसी होनी है। जितना याद करेंगे उतना ही कर्म-ईन्द्रियां चंचल न होंगी। कर्म ईन्द्रियां चंचल बहुत होती है। उनको ह। माया कहा जाता है। कर्म- ईन्द्रियां से कुछ भी खराब काम न हो। जैसे नागे सन्यासी होते हैं। वह दवाईयों से कर्म-ईन्द्रियों को नससता कर देते हैं। यहां तो कर्म ईन्द्रियों को वस करना होता है। है याद की यात्रा। निससता आद करने की बात ही नहीं। बच्चे कहते हैं बाबा यह क्यों होता है। बाप कहते हैं तुम जितना याद में रहेंगे उतना ही कर्म-ईन्द्रियां वस में हो जावेंगी। इसको ही कहा जाता है कर्मातीत अवस्था। यह सिर्फ याद की यात्रा से ही होती है। इसलिए भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है। सो तो भगवान ही सिखलावेंगे। भगवान सिखलाते हैं अपने बच्चों को। यह तो जानते हो सब से कड़ी कर्म-ईन्द्रियां हैं विकार की। उस पर योगबल से जीत पाने का पुरुषार्थ करना है। अभी वस नहीं हो जावेंगे। वह तो पिछाड़ी में होंगे। जब परपक्व अवस्था हो जावेंगी। फिर कोई भी कर्म-ईन्द्रियां चुचलता नहीं करेंगी। अभी चंचलता बन्द होने से फिर 2। जन्म लिए कोई भी कर्म-ईन्द्रियां धोखा नहीं देंगी। 2। जन्म लिए कर्म-ईन्द्रिया वस हो जाती है। सब से मुख्य है काम। याद करते-करते कर्म-ईन्द्रियां वस हो जावेंगी। उन से फिर कोई भी उल्टा कार्य न होगा। अभी कर्म ईन्द्रियां को वस करने से आधा कल्प के लिए इनाम मिलता है। वस न कर सकते हैं तो फिर पाप रह जाते हैं। तुम्हारे पाप योगबल से कट जावेंगे। तुम पवित्र होते जाते हो। यह है नम्बरवन सबजेक्ट। बुलाते भी हैं पतित से पावन होने के लिए। तो बाप ही आकर पावन बनाते हैं। बाप ही नालेज फुल है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। बाप को याद करो, यह भी नालेज है ना। एक है योग की नालेज, दूसरा है 84 के चक्र का नालेज। दो नालेज है। फिर उसमें दैवी गुण आटोमेटिकली इमर्ज है। बच्चे जानते हैं हम मनुष्य से देवता बनते हैं। तो दैवी-गुण जरूर धारण करनी है। अपनी जांच रखनी है। नोट करने से अपने ऊपर सावधान रहेंगे। अपनी जांच रखेंगे फिर कोई भूल न होंगी। बाप खुद कहते हैं मामेकं याद करो। तुम ने ही मुझे बुलाया है। क्योंकि तुम जानते हो बाबा पतित पावन है। वह जब आते हैं तब ही डायरेक्शन आद देते हैं। अभी इन डायरेक्शन परअमल करना है आत्माओं को। तुम पार्ट बजाते हो इस शरीर द्वारा। तो बाप को भी जरूर शरीर में आना पड़े। यह बहुत वन्डरफुल बातें हैं। त्रिमूर्ति का चित्र कितना क्लीयर है। ब्रहमा तपस्या करके यह बनते हैं। फिर 84जन्मों बाद यह बनते हैं। यह भी बुधि में याद रहे हम ब्राहमण सो ही देवता थे फिर 84 का चक्र

लगाया। अभी फिर देवता बनने आये हैं। देवताओं की डिनायस्टी हो जाती है। तो भक्ति-मार्ग में बहुत प्रेम से उनको याद करते हैं। अभी वह बाप तुमको यह पद पाने लिए युक्ति बतलाते हैं। यह है बहुत सहज। याद भी बहुत सहज है। सिर्फ सोने का बर्तन चाहिए। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही नये2 पायन्ट्स इमर्ज होंगे। ज्ञान भी अच्छा सुनाते रहेंगे। समझेंगे जैसे कि बाबा हमारे में प्रवेश कर मुरली चला रहे हैं। बाबा भी बहुत मदद करते हैं। औरों का कल्याण को करना है ना। वह भी ड्रामा में नूंध है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। टाईम पास होता जाता है। इतने वर्ष-इतने मास, इतने घंटे इतने सेकण्ड कैसे पास होते हैं। शुरु से लेकर टाईम पास हो जाता है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। यह सेकण्ड फिर 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। यह भी अच्छी रीत समझना है। और बाप को याद करना है। जिससे विकर्म विनाश हो। और तो कोई उपाय ही नहीं। इतना समय जो कुछ करते आये वह सभी थे भक्ति। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देंगे। क्या फल देंगे, यह किसको भी पता नहीं है। क्या फल देते, कब और कैसे देते हैं यह कुछ भी पता नहीं है। बाप जब आवे फल देने लिए तब लेनेवाले देनेवाले इकट्ठे हो। बाप चला गया तो ने लेने वाला, न देनेवाला रहा। ड्रामा का पार्ट आगे चल जाता है। सारी हयाती (लाईफ) में अभी यह अन्तिम जन्म है। अन्तिम लाईफ है। हो सकता है कोई शरीर भी छोड़ दे। और कोई पार्ट बजाना है तो जन्म भी ले सकते हैं। किसका बहुत पापहोगा, हिसाब-किताब होगा 10 जन्म भी ले सकते हैं। घड़ी2 एक जन्म ले फिर दूसरा तीसरा जन्म लेते रहेंगे। गर्भ में गया दुःख भोगा फिर शरीर छोड़ दूसरा लिया। काशी करवट में भी यह हाल होता है। पाप सिर पर बहुत है। योगबल तो है नहीं। काशी करवट खाना यह है अपने शरीर को घात करना। कहते भी हैं बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर बल चढ़ेंगे। परन्तु अर्थ का किसको भी पता नहीं। भक्ति मार्ग में बल चढ़ते हैं वह भी भक्ति ही जाती है। दान-पुण्य, तीर्थ आद जो कुछ करते हैं वह किस से लेन-देन होती है। पापात्माओं साथ। रावण राज्य है ना। बाप कहते हैं खबरदारी से करना। कहां कोई खराब काम में लगाया तो सिर पर बोझा चढ़ जावेगा। दान-पुण्य भी बड़ा खबरदारी से करना होता है। गरीबों को तो अन्न अथवा कपड़े आद दान दिया जाता है। वा आजकल धर्मशाला आद भी बनवा करदेते है। शाहुकारों के लिए तो बड़े2 महल हैं। गरीबों के लिए है झोपड़ियां। वह तो गन्दे नालों के आगे रहे पड़े हैं। वह हीरे हुए हैं। उनको थोड़े ही नाम आती है। इस कचड़े का फिर खाद बनता है। जो फिर बिकता है। जिस पर फिर खेती आद होती है। सतयुग में तो ऐसे किचड़े पर खेती आद होती ही नहीं। वहां तो नई मिट्टी होती है। उसका नाम ही है पैराडाईज। नाम भी गाया हुआ है पुराज परी, सब्ज़परी ... रत्न है ना। रत्न है आत्मा। कैसे रत्न हैं। कोई कैसे सर्विस करते हैं कोई कितनी सर्विस करते हैं। कोई कहते हैं हम सर्विस नहीं कर सकते। बाबा के रत्न तो सभी है ना परन्तु उन में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है जो फिर पूजे जाते हैं। पूजा होती है देवताओं की। भक्ति मार्ग में अनेकानेक प्रकार के पूजाएं आद होती हैं। वह भी ड्रामा में सभी नूंध है। जिसको देखकर मज़ा आता है। हम एक्टर्स हैं। इस समय तुमको नालेज मिलती है। तुम बहुत खुश होते हो जानते हो भक्ति का भी पार्ट है। भक्ति में भी बड़ी खुशी होती है। गुरु ने कहा माला फेरो। बस उस खुशी में फेरते ही रहते हैं। समझ कुछ भी नहीं। शिव तो है निराकार। उनको भला फिर दूध पानी आद क्यों चढ़ाते हैं। बेसमझी है ना। मूर्तियों को भोग लगाते हैं। वह कोई खाते थोड़े ही हैं। भक्ति का पेशगीर कितना बड़ा है। जैसे झाड़ बड़ा होता है ना। भक्ति भी है झाड़। ज्ञान है बीज। झाड़ कितना बड़ा है वैराईटी मनुष्यों का। अभी तुम्हारी बुधि में रचयिता और रचना का सारा नालेज है। रचयिता बाप और रचना को दुनिया में सिवाय तुम बच्चों के और कोई भी नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। जितना जानते हैं उतना औरों को समझाते रहते हैं। उनको तो सारा दिन बुधि में सर्विस ही सर्विस है। और कोई बात नहीं। अभी हड्डियां भी इसी सर्विस में स्वाहा रकने वाले हैं। अभी तुम बच्चों ने रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त

को समझा है। कितना बड़ा बेहद का झाड़ है। तुमको कोई कहते हैं यह तुम्हारी कल्पना है। अरे यह तो वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी रिपीट होती है। कल्पना रिपीट थोड़े ही होता है। यह तो नालेज है उनको कल्पना कैसे कहेंगे। कोई पढ़कर क्या क्या बनते हैं उनको कल्पना कैसे कहेंगे। यह नालेज है। यह है नई बातें नई दुनिया के लिए। भगवानुवाच है ना। भगवान भी नया। वाच भी है नई। वह कहते हैं कृष्णभगवानुवाच। तुम कहते हो शिव भगवानुवाचः। हरेक की वाच अपनी3 हैं। एक न मिले दूसरे से। यह है पढ़ाई। स्कूल में भी पढ़ाई है ना। कल्पना की तो बात ही नहीं। बाप है ज्ञान सागर, नालेज-फुल। उनको सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का नालेज है। शास्त्रों में लिखा हुआ है ऋषियों-मुनियों से पूछा तुम रचयिता और रचना को जानते हो तो कहते थे हम नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो उन्हों को नालेज मिली हो कहां सेजब कि आदी सनातन देवी देवता धर्म ही नहीं जानते। जिन्हों ने जाना है उन्हों ने ही पद पाया है। फिर जब संगम युग आवे तब ही बाप आकर नालेज पढ़ावे। तो नये2 ज्ञान बातों में सुनते हैं। कहते हैं तुम लोग इतने थोड़े हीरे×राईट हो बाकी शास्त्र आद सभी झूठे हैं। बाप कहते हैं गीता झूठी तो सभी बाल बच्चे झूठे हो गये। वरसा किससे मिलेगा। गीता है माई-बाप। बाकी सभी है रचना। उन से वरसा मिल न सके। वेदों शास्त्रों आद में रचयिता और रचना की नालेजहो न सके। पहले यह तो बताओ वेदों ने कौन सा धर्म की स्थापना किया। धर्म तो है ही चार। हरेक धर्म का धर्म-शास्त्र एक ही होता है। दस थोड़े ही होते हैं। शास्त्र होता ही है एक। तो यह भी वन्डरफुल बात है। जो एक भी मनुष्य नहीं जानते। बाप ही आकर ब्राह्मण कुल स्थापन करते हैं। ब्राह्मणों को नालेज देते हैं। जो फिर सूर्यवंशी चन्द्रवंशी कुल में अपना पद पाते हैं। यह किसको भी मालूम नहीं हैं। शास्त्र तो सभी है रचना। रचयिता तो एक ही है। रचना से वरसा नहीं मिल सकता। वरसा मिलता ही है रचयिता से। वह तो बाप है। सर्वशास्त्र मई शिरोमणी गीता गाई हुई है। भगवान किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानते। कह देते हैं सर्वव्यापी है। कृष्ण में भी है=फलाना में भी हैं। इसमें यह सभी नूंध हैं। आप आकर सम्मुख तुमको सिखलाते हैं। इस रथ द्वारा। रथ तो जरूर चाहिए ना। आत्मा तो है निराकार। उनको सागर शरीर मिलता है। तो निराकार और साकार दोनों कहा जाता है जीवात्मा। दो हो जाते हैं। यह भी अर्थ किसकी बुधि में नहीं है कि आत्मा क्या चीज़ है। उनको ही नहीं जानते तो बाप को फिर कैसे जानेंगे। बाप बैठ रियलाईज़ कराते हैं। आत्मा और परमात्मा क्या चीज़ है। मनुष्य जो सुनते हैं वह बोलते रहते हैं। परन्तु है बिल्कुल रांग। राईट तो बाप ही सुनाते हैं। अभी तुम राईट बनते हो। जिससे फायदा कुछ भी नहीं। माला किसकी सिमरते हैं कुछ भी पता नहीं हैं, जैसे जट लोग हैं। जो जिसने कुछ कुछ कहा वह सत्य मानते। पत्थर से बैठ माथा मारते हैं। (स्पष्ट करना) और ही पतित बनते जाते हैं। तो फिर माला सिमरने से फायदा क्या ही क्या। अर्थ ही नहीं समझते हैं। पत्थर मारते2 और ही पत्थर बुधि बन गये हैं। उनको कहा जाता है तुच्छ बुधि। सारी दुनिया में देखो क्या लगा पड़ा है। दुःख ही दुःख है। सभी आरफन बन पड़े हैं। बाप को ही नहीं जानते। बाप खुद आकर अपना परिचय देते हैं। ज्ञान से सदगति होती है। बाकी भक्ति से है दुर्गति। यह भी बाप ही बतलाते हैं। और कोई भक्त ऐसा नहीं कहेंगे कि भक्ति से दुर्गति होती है। यह तो बाप ही समझाते हैं। ज्ञान जिन्दाबाद भक्ति मुर्दाबाद होती हैं। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है भक्ति। भक्ति शुरु होती है रावण राज्य से। भक्ति से सीढ़ी उतरते2 तमोप्रधान पत्थर बुधि बन पड़ते हैं। किसके आक्युपेशन को ही नहीं जानते। भगवान की कितनी पूजा आद करते हैं। जानते कुछ भी नहीं। तो बाप समझाते हैं इतना ऊंच पद पाने लिए अपने को आत्मा समझना है। और बाप को याद करना है। इसमें है मेहनत। अगर किसकी मोटी बुधि है तो मोटी बुधि से याद करे परन्तु याद एक को ही करे। गाते भी हैं बाबा आप आवेंगे तो आप से ही बुधि योग जोड़ेंगे। अभी बाप आये हैं। तुम सभी किससे मिलने आये हो। जो प्राण दान देते हैं=आत्मा को। अपरलोक में जाते हैं। बाप ने समझाया है काल पर जीत पहनाता हूं। तुमको अपर-

लोक में ले जाता हूं। दिखाते हैं अमरकथा पार्वती को सुनाई। अभी अमरनाथ तो एक ही है। यहां थोड़े ही पहाड़ों पर बैठ कथा सुनावेंगे। सो भी झूठी कथा लगा दिया है। बिल्कुल ही 100% झूठ। है कुछ भी नहीं। बर्फ का इतना बड़ा लिंग आपे ही कैसे बन जावेगा। कितनी झूठ है। उनको भी सत्य कह देते। फिर जाते हैं शिव का दर्शन करने। अभी शिव बाबा नीचे कहां से आया। हर बात में अभी बन्डर लगता है। भक्ति मार्ग में जहां जाओ सभी बन्डर्स हैं। तुम ने ही 84 जन्म लिये हैं कितने तीर्थ यात्रा आद की होंगी धक्के खाये होंगे। धक्के खाते2 जाकर पटपड़े हो। भक्ति कितना रची से करते हैं' जान देते हैं' शास्त्रों को भी बहुत मान देते हैं' बाप कहते हैं यह सभी है भक्ति। अन से कोई की भी सदगति नहीं हो सकती है। दुर्गति दुर्गति है। सदगति सदगति है। ज्ञान का फल होता है सतयुग-त्रेता में। भक्ति का फल भी आधा कल्प। तुमको अभी स्वर्ग का अथवा विश्व का मालिक बनाते हैं। यह तुम जानते हो ना। यह तो जानते हो हम विश्व के मालिक थे। यह ल०ना० विश्व के मालिक थे ना। फिर कहां गये। एक को भी पता नहीं है। तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। यह घराना था। आदी सनातन देवी देवता घराना था। अभी भक्ति पूरी होती है। रावण राज्य जब पूरा होता है तब ही मैं आता हूं। रामराज्य स्थापन करने। रावणराज्य रामराज्य भी तुम समझते हो। और कोई नहीं। कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जान सकते हैं। कितनी अन्धश्रधा है। भारत कितना ऊंच था। अभी भारत की क्या हाल हो गई है। कितना उधार लेते रहते हैं। आमदनी तो कुछ है नहीं। खर्चा ही है तो लोन लेना पड़ता है। भारत कितना शाहुकार था। कुबेर के खज़ाने थे। अभी भीख मांग रहे हैं। पाई पाई के लिए हैरान हैं। कहां भारत सोने की चिड़ियां थी। कहां अभी भीख मांग रही है। इनसालवेन्ट है ना। भारत कितना सालवेन्ट था। अभी इनसालवेन्ट है। फिर हिस्ट्री रिपीट होनी है। तुम फिर से विश्व के मालिक बन रहे हो। ज्ञानसे तुम आधा कल्प सुखी होते हो। फिर भक्ति से आधा कल्प दुःख होता है। कर के सुख भी है तो अल्प काल के लिए। काग विष्टा समान सुख है। बाप बच्चों को ही बैठ समझाते हैं। भगवानुवाच है ना मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। गीता में अक्षर भल पढ़ते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। पढ़ाने वाले भी कुछ नहीं समझते हैं। भगवान सर्वव्यापी कहना कितना गपोड़ा है। कितनी गालियां आद देते हैं। भगवान उल्हना देते हैं। मैं आता ही तब हूं जब तुम हमारी ग्लानी करते हो। रावण के मत पर, गुरुओं के मत पर तुम क्या2 करते हो। मुझे कण2 में ठोक देते हो। यह तो बेहद की गालियां हो गई। कहते हैं ना जास्ती गालियां देंगे तो मौत के सिवाय और कुछ नहीं देखेंगे। बाप भी कहते हैं बस इससे जास्ती गालियां मत दो। फिर भी तुम सुधरते नहीं हो। तो विनाश को पावेंगे। तुम बहुत ग्लानी करते हो। मैं तुमको सदगति देता हूं। तुम फिर मेरा इतनी ग्लानी करते हो। 24 अवतार कच्छ मच्छ अवतार, अच्छा वह भी छूटा, माफ है। फिर कहते हो ठिक्कर भित्तर में हैं अभी यह सहारन नहीं होता है। टूमच में हो गया। कितना अपकार करते हो। यह भी ड्रामा में नूंध है। बाप फिर सभी पर आकर उपकार करते हैं। निष्काम सेवा इसको कहा जाता है। बच्चों को राज्य देकर खुद वानप्रस्त में चले जाते हैं। मैं स्वर्ग का राज्य नहीं करता हूं। मैं स्वर्ग का राज्य करूं तो फिर नर्क का भी मुझे करना पड़े। ख्याल करो। बेहद का नाटक यह कितना मजे का है। यह तुम्हारे सिवाय और कोई समझा न सके। तुम सुनाते हो तो सुन कर बावरे हो जाते हैं। कल्प पहले वाले ही समझते हैं। तुमको कहते हैं तुम कोई शास्त्र आद पढ़े नहीं हो। बोलो हमने तो पूरा आधा कल्प शास्त्र आद पढ़ी हैं। भक्ति की है। इतनी भक्ति तो तुम ने भी नहीं की है। हमको तो स्क्युरेट मालूम है इतने जन्म हमने भक्ति की है। तुम ने थोड़े ही देखा है। तुमको कहते हैं शास्त्रवाद करो तो तुम मुंह ढीला कर देते हो तो वह बोलने लग पड़ते हैं। तुम बोलो वह है भक्ति। यह है ज्ञान। भक्ति से दुर्गति। ज्ञान से सदगति होती है। बड़ा युक्ति से समझाना है। अच्छा तुम बच्चों को योग भी सिखाया। ज्ञान भी सिखाया। ज्ञान और योग। योगसे तुम पावन बनते हो। पीस प्रास्पर्टी मिल जाती है। आयु भी बड़ी हो जाती है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।

*::***::*